REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

गोंड़ समाज में महिलाओं की स्थिति

डॉ. कुमकुम कस्तुरी
सहायक प्राध्यापिका, जनजाति अध्ययन विभाग
इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय,
अमरकण्टक.

सारांश :–

गोंड़ समाज में महिलाओं की उच्च प्रस्थिति प्राप्त है। गोंड़ों के बीच यह मान्यता है कि, गोंड़ समाज में पुरूषों का सामाजिक महत्व 1 इकाई है, तो महिलाओं का 1.5 इकाई गोंड महिलाएँ अपनी इच्छा से शादी कर सकती हैं, तलाक देने का अधिकार महिलाओं को नहीं है, पर पति को विवाह–विच्छेद के लिये बाध्य कर सकती हैं, दूसरी शादी कर सकती हैं। विधवा महिलाओं का पुनर्विवाह हो सकता है। मनोरंजन, नाच–गान, मेले, त्यौहार एवं उत्सवों में यहां तक की मद्यपान या शराब पीने में भी जनजातीय पुरूषों से इन्हें समानता की स्थिति प्राप्त है। लड़की का जन्म बुरा नहीं माना जाता। लिंगानुपात गोंड़ जनजाति में महिलाओं की उच्च प्रास्थिति का सूचक है।

महिलाएँ ही गोंड़ परिवार के अर्थव्यवस्था की धुरी हैं। आर्थिक दृष्टि से उत्पादन, बाजार में बेचना, खरीदारी करना, वनोपज संग्रहण में महिला महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

कुँजी शब्द :– गोंड–जनजाति, महिलाओं की स्थिति, परिवार, समाज संगठन.

प्रस्तावना :

मध्य भारतीय राज्यों में संख्या बाहूल्य जनजाति समाज में गोण्ड जनजाति प्रथम क्रमांक में है जिनका विस्तार दक्षिण में तेलंगाना के निर्मल जिला से लेकर उत्तर में उत्तर प्रदेशके ललितपुर जिला तक तथा पूर्व में ओडिशा के केऊँझर जिला से लेकर पश्चिम में मध्यप्रदेश के रायसेन जिले तक है। गोंड़ जनजाति में सामाजिक चैतन्यता काफी गहराई लिये हुए हैं समाज यहां एक बृहद् इकाई है और पूरा समाज एक वृहद परिवार की भांति अपने परंपरागत रूप में गोंड़ समाज सामूहिक जीवन का अभ्यस्त होता है और समूह के बिना जीवन की कल्पना भी उसे भयावह लगती है। इसलिये समाज बहिष्करण इनमें सबसे कठोर सजा मानी जाती है, जिससे सभी बचना चाहते हैं। समाज में नारी या महिलाओं को एक विशेष स्थान प्राप्त है । गोंड समाज में अगर परिवार को प्रथम पाठशाला माना जाता है तो उस पाठशाला के प्रथम और प्रमुख शिक्षक है परिवार की माँ (नारी) ।

इस समाज में महिलाओं की स्थिति पर अध्ययन करने से पहले हमें इस जनजातीय समाज के सामाजिक संगठन और परिवार के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी होना अध्ययन के आधार हतु अपरिहार्य है।

1. सामाजिक संगठन

परिवार सामाजिक संगठन की आधारभूत इकाई होता है। संतान पिता के वंष की समझी जाती हैं। गोंड़ समाज पितृसत्तात्मक होता हैं। परिवर में बुजुर्गों का यथेष्ठ सम्मान होता है। पुरूष ही घर का मालिक होता है। बेटी विवाह के पष्चात् अपने पति के परिवार का सदस्य मानी जाती है। गोंड़ समाज में न सिर्फ परिवार,

नातेदारी, जाति, रीति–रिवाज़, संस्कृति त्यौहार इत्यादि वरन आर्थिक व्यवस्था में न्याय व्यवस्था भी समाज–व्यवस्था का ही विस्तार है। इस संदर्भ में किया गया सर्वेक्षण निम्नतालिका में प्रस्तुत किया जा रहा है –

सारणी क्र. 1
गोंड़ जनजाति : परिवार का मुखिया

पुरूष	महिला	कोई भी
96 %	0 %	4 %

आरेख क्र. 1

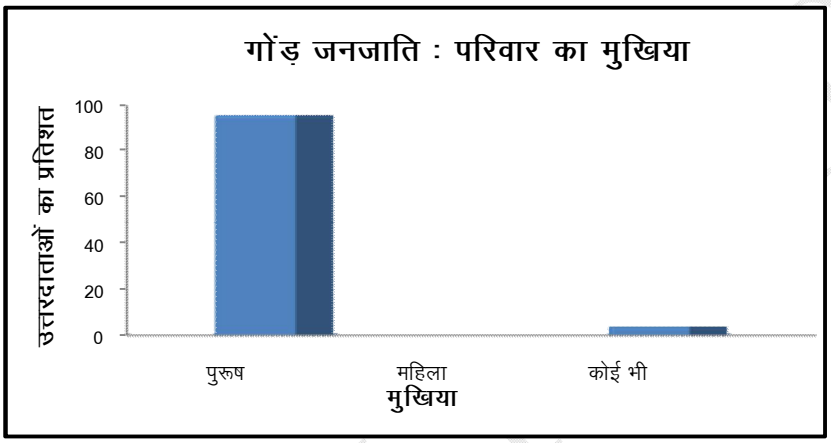

उपरोक्त सारणी में परिवार के मुखिया से संबन्धित आंकड़ों को दर्शाया गया है। सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि 96 प्रतिशत लोगों ने बताया कि घर का सबसे बड़ा पुरूष परिवार का मुखिया या मालिक होता है। 4 प्रतिशत ने बताया कि स्त्री या पुरूष कोई भी परिवार का मुखिया हो सकता है। निष्कर्षतः सामाजिक मान्यता के अनुसार परिवार का मुखिया पुरूष माना जाता है।

2. परिवार

परिवार राजनीति की प्रारंभिक पाठशाला है। परिवार में ही आज्ञाकारिता, अनुशासन, उचित – अनुचित तथा अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान कराया जाता है। गोंड़ समाज में व्यक्तिगत तथा संयुक्त दोनों प्रकार की परिवार की परंपरायें देखने को मिलती हैं। शोधकर्त्ता द्वारा किया गया अध्ययन विभिन्न सारणी द्वारा प्रस्तुत है –

सारणी क्र. 2
गोंड़ जनजाति : परिवारिक संगठन

एकल परिवार (पति, पत्नि और अविवाहित बच्चे)	संयुक्त परिवार (माँ–बाप, पति–पत्नि, भाई बहन और बच्चे)	दोनों प्रकार के
36 %	24 %	40 %

आरेख क्र. 2

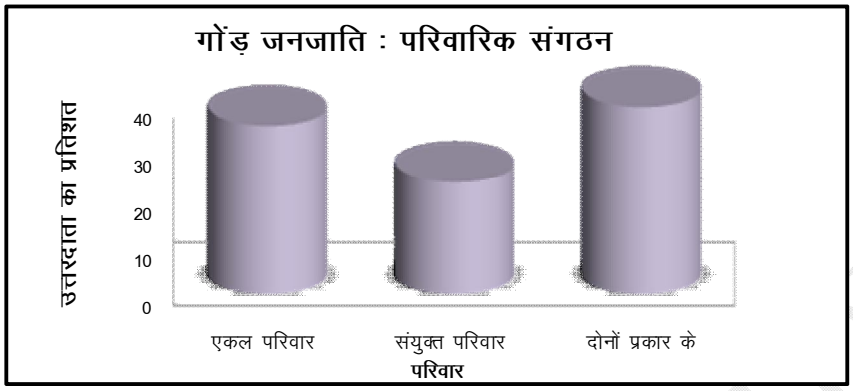

उपरोक्त सारणी में गोंड़ समाज में पारिवारिक संगठन को दर्शाया गया है। 40 प्रतिषत लोगों ने बताया कि एकल परिवार और संयुक्त परिवार दोनों प्रकार की परंपरायें हैं। 36 प्रतिषत गोंड़ों समाज के लोगों ने बताया कि शादी के पश्चात् पुत्र की अलग मकान दे दिया जाता है और वह अपनी पृथक गृहस्थी का संचालन करता है। 24 प्रतिशत लोगों ने बताया कि कलह को समाप्त करने के लिए भले ही भाई अपने पति–पत्नि के साथ अलग – अलग रहते हों, लेकिन उसका परिवार संयुक्त ही माना जाता है एवं पिता घर का मालिक होता है।

सामान्यतः गोंड़ों में एकपति एवं एक पत्नी प्रथा का ही प्रचलन है। धनवान गोंड़ एक से अधिक पत्नियाँ भी रखते हैं, जिसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है। बहुपति प्रथा गोंड़ समाज में देखने को नहीं मिलती। परिवार में बुजुर्गों का यथेष्ट सम्मान होता है। शोधकर्त्ता द्वारा किया गया अध्ययन निम्न तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी क्र. 3
गोंड़ों में पत्नी की संख्या

जनजाति	सिर्फ एक पत्नी	अधिकतम दो पत्नी	कितनी भी
गोंड़	65 %	30 %	05 %

आरेख क्र. 3

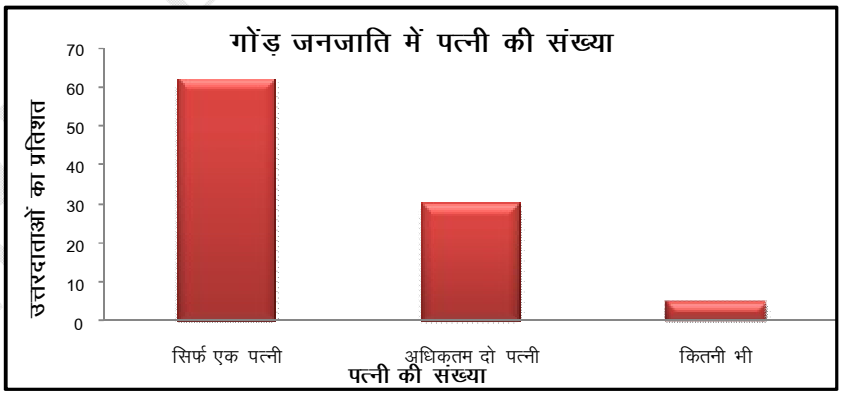

उपरोक्त तालिका में पुरूषों की पत्नियों की अधिकतम संख्या संबन्धी आंकड़ों को दर्शाया गया है। 65 प्रतिशत लोगों ने बताया कि एक समय में सिर्फ एक ही वैद्य पत्नी की सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है। 30 प्रतिशत लोगों ने बताया कि व्यक्ति सक्षम होने पर एक से अधिक पत्नियाँ भी रख सकता है। पहले गोंड़ राजा महाराजा के पास कई पत्नियाँ होती थीं। निष्कर्षतः गोंड़ समाज में सामान्यतः एक ही पत्नी होती है।

सारणी क्र. 4
गोंड़ जनजाति : पति की संख्या

जनजाति	सिर्फ एक पति	अधिकतम दो पति	कितनी भी
गोंड़	100 %	0 %	0 %

आरेख क्र. 4

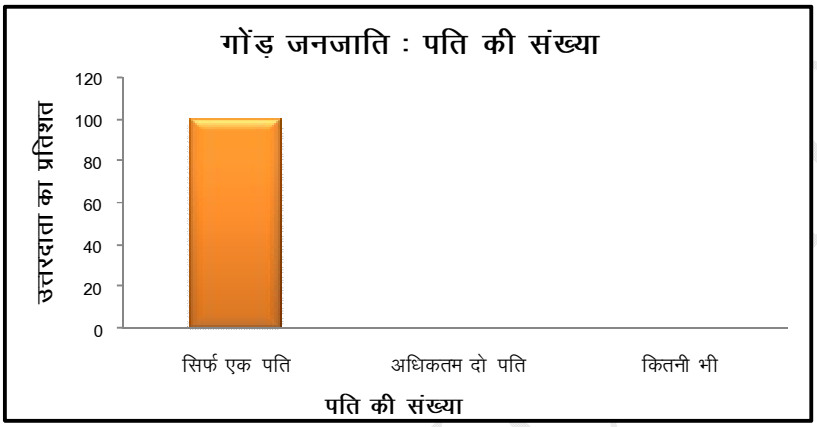

उपरोक्त सारणी क्रमांक 4 में स्त्री के पत्नियों की अधिकतम संख्या संबन्धी आंकड़ों को दर्शाया गया है। कि शत प्रतिशत लोगों ने बताया कि स्त्री एक समय में सिर्फ एक ही पति की पत्नी रह सकती है। दूसरे से शादी से पूर्व उसे पूर्व पति को छोड़ना होता है। निष्कर्षतः गोंड़ समाज में एक पति प्रथा है।

3. महिलाओं की स्थिति

महिलाएँ, गोंड़ परिवार के अर्थव्यवस्था की धुरी हैं। गोंड़ समाज में महिलाओं की उच्च प्रस्थिति प्राप्त है। गोंड़ों के बीच यह मान्यता है कि, गोंड़ समाज में पुरूषों का सामाजिक महत्व 1 इकाई है, तो महिलाओं का 1.5 इकाई गोंड महिलाएँ अपनी इच्छा से शादी कर सकती हैं, तलाक देने का अधिकार महिलाओं को नहीं है, पर पति को विवाह–विच्छेद के लिये बाध्य कर सकती हैं, दूसरी शादी कर सकती हैं। विधवा महिलाओं का पुनर्विवाह हो सकता है। मनोरंजन, नाच–गान, मेले, त्यौहार एवं उत्सवों में यहां तक की मद्यपान या शराब पीने में भी जनजातीय पुरूषों से इन्हें समानता की स्थिति प्राप्त है। लड़की का जन्म बुरा नहीं माना जाता। लिंगानुपात गोंड़ जनजाति में महिलाओं की उच्च प्रास्थिति का सूचक है।

धार्मिक एवं राजनीतिक, व्यवसायिक कार्यों में पुरूषों का वर्चस्व है। आर्थिक दृष्टि से उत्पादन, बाजार में बेचना, खरीदारी करना, वनोपज संग्रहण में महिला महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कुछ क्षेत्रों में पुरूषों एवं महिलाओं में कार्य विभाजन भी है। लेखिका द्वारा किये गए सर्वेक्षण को निम्न तालिका में प्रदर्शित किया जा रहा है –

सारणी क्र. 5

क्र. स.	कार्य	सिर्फ पुरूष	सिर्फ महिला	दोनों में से कोई	दोनों के सहयोग से	कुल
1	हल जोतना	92 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	8 प्रतिशत	100 प्रतिशत
2	बुवाई तथा अन्य कृषि कार्य	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत

3	फसल की कटाई	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
4	खेतों की निगरानी	40 प्रतिशत	0 प्रतिशत	14 प्रतिशत	36 प्रतिशत	90 प्रतिशत
5	कृषि उपकरणों का निर्माण	84 प्रतिशत	0 प्रतिशत	6 प्रतिशत	0 प्रतिशत	90 प्रतिशत
6	वनोपज का संग्रहण	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	100 प्रतिशत	100 प्रतिशत
7	खाना बनाना	0 प्रतिशत	100 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	100 प्रतिशत
8	पशुपालन	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	41 प्रतिशत	59 प्रतिशत	100 प्रतिशत
9	शिकार	89 प्रतिशत	0 प्रतिशत	6 प्रतिशत	0 प्रतिशत	95 प्रतिशत
10	मछली पकड़ना	38 प्रतिशत	0 प्रतिशत	5 प्रतिशत	47 प्रतिशत	95 प्रतिशत
11	पेड़ या लकड़ी काटना	58 प्रतिशत	0 प्रतिशत	15 प्रतिशत	21 प्रतिशत	94 प्रतिशत
12	नृत्य संगीत, गीत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	10 प्रतिशत	80 प्रतिशत	90 प्रतिशत
13	पूजा–पाठ	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	11 प्रतिशत	80 प्रतिशत	100 प्रतिशत
14	बलि	100 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	100 प्रतिशत
15	धार्मिक कृत्यों का पौरोहित्य	100 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	100 प्रतिशत
16	गाँव के सामाजिक या राजनीतिक प्रकृति के कार्य यथा मुखिया, कोटवार, दवान, सयान इत्यादि	100 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	0 प्रतिशत	100 प्रतिशत

उपरोक्त तालिका में स्त्री और पुरूषों के कार्य–विभाजन संबन्धी आंकड़ों को प्रस्तुत किया गया है। सारणी के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि आर्थिक क्रियकलाप में महिलाओं की पूर्ण भागीदारी होती है। नृत्य संगीत में भी दोनों की बराबर भागीदारी होती है, लेकिन कुछ कार्य ऐसे भी हैं जिन्हें सिर्फ महिलाएं या परूष कर सकते हैं। धार्मिक एवं गाँव के पंचायत, सियान परिषद् या सामाजिक पद पारंपरिक रूप से पुरूषों को ही प्रदान किया जाता है। धार्मिक कृत्य का संपादन भी पुरूषों द्वारा ही सम्पन्न किया जाता है। खाना बनाना, बच्चों का पालन–पोषण एवं घर की साफ–सफाई का कार्य महिलाओं द्वारा किया जाता है।

गोंड़ जनजाति की सामाजिक संरचना समाज के विकास के उन आदिम अवस्था की तरफ निर्देश करते हैं, जब स्त्री–पुरूष के संबन्धों को नियंत्रित करने के लिए नियम बनाए गए। गोंड़ समाज के प्रत्येक सदस्य एक सामाजिक इकाई है। आपसी सहयोग, परस्परिकता, रास–रंग, आनन्द एवं सहजीवन इनके सामाजिक संरचना की उत्कृष्टता को दर्शाता है। गोंड़ समाज सामाजिक दृष्टि से अत्यंत संगठित है एवं अपने सामाजिक आदर्शों, मूल्यों, परम्पराओं के साथ निष्ठापूर्वक जुड़ा हुआ है।

निष्कर्ष के रूप से कह सकते हैं कि गोंड़ जनजाति की सामाजिक संरचना समाज के विकास के उन भारतीय आदिम व्यवस्था की ओर निर्देशित करती है, जहॉ स्त्री सदैव उच्च और वन्दनीय स्थान पर होती है। अबला गोंड स्त्री अपने घर परिवार और समाज संस्कृति की रक्षा के लिये आवश्यक पडने पर सबला हो कर दुर्गा का अवतार धारण किया है। नारी और पुरूष एक दुसरे का पूरक बनकर अपने परिवार व समाज का संपोषण करते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

- अग्रवाल, रामभरेास (1986), ''गोंड जनजाति का सामाजिक अध्ययन'' गोंड़ी पब्लिक ट्रस्ट, मण्डला।

- एल्विन वेरियर, (1947) ''द मुरिया एण्ड देयर घोतुल'' ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- ग्रिग्सन, डब्ल्यू. व्ही. (1938) ''द मारिया गोंड्स ऑफ बस्तर'' ऑक्सफोर्ड।
- चट्टोपाध्याय, कमला देवी (1978), "ट्राइबलिज्म इन इंडिया", विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
- बोस एन. के. (1971) ''ट्राइबल लाइफ इन इंडिया'' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली।
- वनस्वर शोध पत्रिका, गोंडी संस्कृति अंक, जून 2003 वन साहित्य अकादमी, जबलपुर।

LBP PUBLICATION